पाठ 5 जनवरी 27 - फरवरी 2

अदन के बाद प्रबंधक (भण्डारी)

सब्त अपराह्न **जनवरी 27**

इस सप्ताह के अध्ययन के लिये पढ़ें: यशा० 22: 14-18; 1कुरि० 4: 1-2; कुलु० 2: 2-3; इफि० 6: 13-17; 2कुरि० 5: 10 ।

याद वचन: *"पर जैसा परमेश्वर ने हमें योग्य ठहराकर सुसमाचार सौंपा, हम वैसा ही वर्णन करते हैं; और इसमें मनुष्यों को नहीं, परन्तु परमेश्वर को जो हमारे मनों को जांचता है, प्रसन्न करते हैं" (थिस्स० 2: 4)।*

आदम और हवा के पहले काम में भण्डारीपन शामिल था। वाटिका और समस्त सृष्टि उन्हें देख-भाल के लिये, आनन्द करने के लिये, और उस पर प्रभुत्व करने के लिये दी गई थी (उत्प० 2: 15), यद्यपि इनमें से कोई इनके नहीं थे। तथापि परमेश्वर ने जो उन्हें सौंपा था उसके भण्डारी थे।

इस सप्ताह, हमारे आदि माता-पिता के पतन के बाद, अदन से निकाले जाने के बाद भण्डारी की परिभाषा पर सूक्ष्म अध्ययन करेंगे। यह कि, हम भी भण्डारी हैं, परन्तु हम एक पर्यावरण में भण्डारी हैं अदम और हवा से बिलकुल भिन्न जिसका उन्होंने पहले आनन्द मनाया।

भण्डारीपन क्या है? निश्चित रूप से बाईबल के पात्र अपने जीवन जीने के द्वारा प्रकट करते हैं कि एक भण्डारी क्या है। दूसरे पवित्र शास्त्र इसे और स्पष्टता से वर्णन करते हैं। जब हम परमेश्वर के भण्डारी हो जाते हैं, संसार पर हमारा ध्यान और इसका भौतिक मोल सृष्टिकर्त्ता और उसके उद्देश्य पर केन्द्रित हो जाता है। आदम और हवा के समान परमेश्वर हमें ईश्वरीय मूल की जिम्मेदारियों को सौंपता है। अदन में पतन के बाद से, हालांकि भण्डारपन का कार्य बदल गया है, क्योंकि भौतिक संसार की देखभाल की जिम्मेदारियों के साथ हम भी आत्मिक सच्चईयों के अच्छे भण्डारी होने को सौंपे गये हैं।

रविवार **जनवरी 28**

पुराने नियम में भण्डारी

पुराने नियम में शब्द "भण्डारी" स्वयं कुछ समयों के लिये अनुवादित हुआ है। अधिकांश मामलों में यह उस वाक्यांश से आता है जो उससे संबंध रखता है, वह है "घर के ऊपर" घर को संचालन करने वाला; वह है एक "भण्डारी" (उत्प० 43: 19; 44: 1-4; 1राजा 16: 9)। भण्डारियों को घर परिवार के कामों की देख-भाल और उनके मालिक की सम्पत्तियों जो भी उन्हें

- सब्त फरवरी 3 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

करने को कहा जाता करने की जिम्मेदारियाँ थीं। पुराने नियम में एक भण्डारी की परिभाषा एक भण्डारी की विशेषताओं को चिह्नित करने के द्वारा ढूंढ़ा जा सकता है। भण्डारी अपने भण्डारीपन से अलग नहीं किये जा सकते, क्योंकि यह उनकी पहचान को व्यक्त करता है।

भण्डारी के कुछ गुण पुराने नियम में स्पष्ट किये गये हैं। पहला, एक भण्डारी का पद महान् जिम्मेदारी का पद था (उत्प० 39: 4)। भण्डारी उनकी योग्यताओं के कारण चुने जाते थे और काम किये जाने के कारण वे अपने मालिकों से आदर और भरोसा पाते थे। दूसरा भण्डारियों को पता था कि जो उन्हें सौंपा गया है उनके मालिक का है (उत्प० 24: 34-38)। भण्डारी अपने पद को समझते हैं। तीसरा, जब भण्डारी जो उन्हें सौंपा गया था अपने व्यवहार के निमित्त ले जाते थे तो उनके और मालिक के बीच भरोसे का संबंध टूट जाता था, और उन्हें (भण्डारियों को) बरखास्त कर दिया जाता था (उत्प० 3: 23, होशे 6: 7)।

पढ़ें, यशायाह 22: 14-18। हिजकियाह के शासन काल में सेबना भण्डारी और खजांची के तौर पर नियुक्त था, दोनों अधिकार के बहुत महत्त्वपूर्ण पद थे। अपने पद के दुरुपयोग स्वरूप उसके साथ क्या हुआ?

_____

_____

"एक भण्डारी अपने मालिक के साथ स्वयं को पहचानता है। वह एक भण्डारी की जिम्मेदारियों को स्वीकार करता है, और उसे अपने मालिक की स्थिरता में काम करना चाहिए, उसे अपने मालिक की अधिकता में कार्य करना चाहिए। उसके मालिक की रुचियाँ उसकी हो जाती हैं। एक भण्डारी का पद सम्मान का पद है क्योंकि उसका मालिक उस पर भरोसा करता है। यदि किसी रीति से वह स्वार्थ पूर्वक कार्य करता है और अपने मालिक की सम्पत्ति से प्राप्त लाभ को अपने लाभ के लिये पलट देता है, उसने अपने ऊपर किये गये भरोसे का दुरुपयोग किया है।"– एलेन जी० ह्वाईट, टेस्टीमोनीज फॉर द चर्च, वॉल्यूम 9, पेज 246.

हम किस प्रकार महत्त्वपूर्ण अवधारणा को बेहतर समझ सकते हैं कि हम सचमुच जो हमारे जीवन में पास रखते हैं उसके भण्डारी हैं? यह अनुभूति किस प्रकार सब में प्रभाव डालती है जो हम करते हैं?

सोमवार **जनवरी 29**

नये नियम में भण्डारी

नये नियम में "भण्डारी" के दो बुनियादी शब्द हैं एपीट्रोपोस (epitropos) तीन बार पाया जा रहा है, और ओइकोनोमोस, (oikonomos) दस बार पाया

जा रहा है। ये दोनों शब्द पदों का वर्णन करते हैं जो मालिक द्वारा भण्डारी को सौंपी गई प्रबंधकीय जिम्मेदारियों को सम्मिलित करते हैं।

दोनों नये और पुराने नियम में, भण्डारी जो करते हैं उसके द्वारा परिभाषित होते हैं। नया नियम खास तौर से भण्डारी को जवाबदेही (लूका 12:48) और उम्मीदों (1कुरि० 4:2) के हिसाब से वर्णन करता है। यद्यपि पुराना नियम बढ़कर परमेश्वर के स्वामित्व को केंद्रित करता है वजाय इसके कि हम उसके भण्डारी हैं। इस प्रकार जब एक भण्डारी की अवधारणा दोनों नियमों के बहुत समान है, नया नियम इस अवधारणा को घर परिवार के प्रबंधन से बढ़कर विस्तार देता है।

बेईमान भण्डारी के दृष्टान्त में (लूका 16:1-15), यीशु भण्डारी की परिभाषा को विस्तार देता है। उसका पाठ वित्तीय संकट से भागने वाले भण्डारी से बढ़कर है। यह उनके साथ भी लागू होता है जो एक बुद्धिमतापूर्ण विश्वास के द्वारा आत्मिक संकट से भागते हैं। एक बुद्धिमान भण्डारी स्वर्ग में और अभी यीशु के लौटने के भविष्य की तैयारी करेगा (मत्ती 25:21)।

पढ़ें 1कुरिन्थियों 4:1-2; तीतुस 1:7; और 1पतरस 4 10। भण्डारी और भण्डारीपन के विषय ये हमें क्या बतलाते हैं?

_____

_____

"क्या मैं अपने हृदय को पवित्र आत्मा के लिये खोल दूँ, ताकि प्रत्येक क्षमता और ऊर्जा जाग जाये, जिसे परमेश्वर ने मेरी जिम्मेदारी में दिया है? मैं मसीह की सम्पत्ति हूँ, और उसकी सेवा में नियुक्त हूँ। मैं उसके अनुग्रह का भण्डारी हूँ"-एलेन जी० ह्वाईट, फण्डामेंटल्स ऑफ क्रिश्चियन एजुकेन, पेज 301।

लूका 12:35-48 में, यीशु भी शब्द भण्डारी" का अलंकारिक प्रयोग करता है। वह बुद्धिमान भण्डारी की बात करता है जो मनुष्य के पुत्र की वापसी की तैयारी कर रहा है, और बेईमान भण्डारी का वर्णन उस प्रकार करता है जिसने देख-भाल छोड़ दी है क्योंकि मालिक की वापसी में देर हो गई है। बेईमान भण्डारी निरंकुश हो गया है और अपने आस-पास के लोगों के लिये अत्याचारी हो गया है। वह अच्छे कामों या अनुग्रह का प्रबंधक का आदर्श नहीं रहा।

जब हम मसीह को ग्रहण करते हैं, हम भण्डारी हो जाते हैं, और मसीह के संसाधनों की देख-भाल के लिये बुलाये गये हैं। परन्तु सबसे महत्त्वपूर्ण, स्वर्ग के लिये मसीही जीवन में तैयारी की आत्मिक सच्चाईयों को हमें देख-भाल करनी है।

पढ़ें लूका 12:45, हम सेवेंथ-डे ऐडवेंटिस्टों के तौर पर विशेष रूप से इस छल में पड़ने से क्यों सावधान होने की जरूरत है, जबकि हम अकसर "देर" के अर्थ से संघर्ष करते हैं?

मंगलवार **जनवरी 30**

परमेश्वर के रहस्यों के भण्डारी

पढ़ें कुलुसियों 2:2-3 और 1तीमु० 3:16, ये पदस्थल "रहस्य" के तौर पर किसे पहचानते हैं? यथार्थ कि यह 'रहस्य' है जो हम जानते हैं उसकी सीमाओं के विषय हमें क्या कहा है?

_____

_____

नामाती सोपर अय्यूब से कहता है "क्या तू ईश्वर का गूढ़ भेद पा सकता है? और क्या तू सर्वशक्तिमान का मर्म पूरी रीति से जाँच सकता है?" (अय्यूब 11:7) शब्द "रहस्य" का अर्थ है पेचीदा, अस्पष्ट अज्ञात या अबोधगम्य। परमेश्वर के रहस्यों का रिकार्ड पवित्रशास्त्र में किया गया है, यद्यपि उन्हें समझना अभी भी हमारे वश की बात नहीं। यही कारण है कि वे रहस्य हैं। यह मानो कि हम सब कोई निकटदर्शी लोग हैं जो स्वर्ग की ओर देख रहे हैं, बहुत ही सूक्ष्म देखने की आशा में। हम उस दूरी तक नहीं देख सकते जबतक परमेश्वर इसे हम पर प्रकट नहीं करता है।

व्यवस्था वि० 29:29 जो हम पर प्रकट हुआ है, उसके विषय क्या कहता है?

उन चीजों के हम भण्डारी हैं जिन्हें हम पूर्णत: नहीं समझते। हम उतना ही जानते हैं जितना प्रकाशन और पवित्रशास्त्र प्रकट करते हैं। हमारा महानतम भण्डारीपन है प्रेम करना "मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी" (1कुरि० 4:1)।

परमेश्वर हमें अपने भण्डारी के तौर पर चाहता है ईश्वरीय सत्य को संरक्षित करने के लिये, सिखाने के लिये, बचाने के लिये और देख-भाल करने के लिये जिसे उसने प्रकट किया है। हम इसे कैसे करते हैं यह आखिरी भण्डारीपन है, और इसका अर्थ है हम "विश्वासी के भेद को शुद्ध विवेक से सुरक्षित रखें" (1तीमु० 3:9)।

महानतम रहस्यों में से वह है जो हम सब मसीह को अनुभव कर सकते हैं, "महिमा की आशा।" उद्धार की योजना अलौकिक घटना है और हमारे लिये पूर्णत: समझना असंभव है। जो भी बना सबका सृटिकर्त्ता (यूहन्ना 1:1-3) इस पृथ्वी पर आयेगा और "शरीर में उजागर" होगा (एलेन जी०

ह्वाईट, मैन्यूस्क्रिप्ट रिलीजेस, वॉल्यूम 6, पेज 112) स्वयं को मानवजाति के पापों के लिये बलिदान स्वरूप देने के लिये रहस्यों को आवश्यक बना देता है जो संभवत: किसी भी सृष्टि के द्वारा पूर्णरूपेण कभी समझा नहीं जा सकता। यहाँ तक कि स्वर्गदूत रहस्य को समझने के लिये अध्ययन करते हैं कि यीशु जगत में क्यों आया (1पत० 1:12)। तथापि वे जो भी जानते हैं हम सबको परमेश्वर को उसकी महिमा और भलाई के लिये प्रशंसा करने हेतु उकसाता है। (देखें प्रका० 5:13)।

आप सुसमाचार के भण्डारी होने को बुलाये गये हैं। वह स्वत: अर्थ लगाता है कि आप के पास कौन-सी जिम्मेदारियाँ हैं?

बुधवार **जनवरी 31**

आत्मिक सच्चाई के भण्डारी

जब हम भण्डारीपन की सोचते हैं, हम वास्तविकता और उचित रूप से ऐसा सोचते हैं। परन्तु अब जैसा कि हमने देखा है, भण्डारीपन इससे पार चला जाता है। जिस प्रकार वास्तविक और अवास्तविक उपहार परमेश्वर की ओर से आते हैं। ये वास्तविकताएँ आत्मिक वस्तुएँ हैं जो परमेश्वर हमें देता है (1पत० 4:10) ताकि हम मसीह में मसीही चरित्र का विकास कर सकें और वे लोग बनें जो हम उसमें बन सकते हैं। इस प्रकार हम अधिक सतर्कता के साथ वास्तविक चीजों की अपेक्षा अवास्तविक उपहारों की देख-भाल कर सकते हैं, क्योंकि वे असीमित रूप से अधिक मूल्यवान हैं।

पढ़ें इफि० 6:13-17, परमेश्वर के द्वारा हमें क्या दिया गया है जिसके हम भण्डारी हैं? इन चीजों की उचित देख-भाल हमारे लिये क्यों इतना महत्त्वपूर्ण है?

_____

_____

_____

"परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है" (रोम० 6:23)। संसार और सब कुछ जो यह देता है, हमें उद्धार नहीं दे सकता जो मसीह में हमारे लिये है। उद्धार एक वरदान जो परमेश्वर हमें देता है, हमारा सबसे मूल्यवान धन है। हमारे सामने हमेशा इस उद्धार की वास्तविकता को रखना हमें परमेश्वर से मिली अन्य वस्तुओं के हमारे भण्डारीपन में दृष्टिकोण को कायम रखता है।

"केवल प्रकाश में, जो कलवरी से चमकता है, प्रकृति की शिक्षा सही पढ़ी जा सकती है। बेतलेहेम और क्रूस की कहानी के द्वारा दिखाया जाये कि

बुराई पर विजय पाना कितनी भली बात है। और किस प्रकार प्रत्येक आशीष जो हमारे पास आती है उद्धार का उपहार है।"– एलेन जी० ह्वाईट, एजुकेशन, पेज 101।

उद्धार हमारा ही है क्योंकि यीशु ने सर्वश्रेष्ठ कीमत चुकाई। पौलुस स्पष्ट कहता है, "हम को उसमें उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है" (इफि० 1: 7)। शब्द "हमको" का अर्थ है कि हमें "उद्धार" प्राप्त है। यह हमारा है, क्योंकि परमेश्वर ने इसे हमें दिया है। कितना महत्त्वपूर्ण है तब, कि हम "परमेश्वर के समस्त हाथियारों" को रखते हैं इफि० 6: 11), ताकि शैतान आकर इसे न ले जाये। क्योंकि एक ही रास्ता है वह इसे कर सकता है यदि हम इसे अनुमति दें, वह होगा केवल यदि हम न मानें जो हमें "परमेश्वर के वचन" में दर्शाया गया है (इफि० 6: 17)। हमारी महान् सुरक्षा आज्ञा मानने के द्वारा है, प्रकाश जो हमें विश्वास में दिया गया है।

पुन: पढ़ें इफि० 6: 13-17, हम परमेश्वर के हथियार को कैसे पहनें, और किस प्रकार हम उस हथियार में, जो हमें दिया गया है, भण्डारी हैं?

बृहस्पतिवार **फरवरी 1**

भण्डारी के तौर पर हमारी जिम्मेदारी

बुद्धिमान भण्डारी व्यक्तिगत जिम्मेदारी के नैतिक सिद्धांत को अपनी इच्छा से ग्रहण करने और कार्यान्वित करने के द्वारा परिभाषित किये जाते हैं। व्यक्तिगत जिम्मेदारी की स्वीकृति एक चुनाव है, जिसे हम लेते और कार्यवाही करते हैं। यह कारण और प्रभाव के बीच संबंध को पहचानता है। व्यक्तिगत जिम्मेदारी को ग्रहण करने की इच्छा एक प्रमुख विशेषता है जिसे इन्कार नहीं किया जा सकता जब हम परिभाषित करते हैं कि एक भण्डारी क्या है, क्योंकि भण्डारियों को दिल से स्वामी की बेहतरीन रुचि में होकर एकनिष्ठ होना आवश्यक है। इस प्रकार ऐसी सम्मति एक चुनाव है जो एक भण्डारी का परमेश्वर के साथ इच्छित संबंध को परिभाषित करता है।

"परमेश्वर लोगों को अपने साथ प्रत्यक्ष संबंध में लाने की इच्छा करता है। लोगों के साथ अपने सभी वर्त्तावों में वह व्यक्तिगत जिम्मेदारी के सिद्धांत को पहचानता है। वह व्यक्तिगत स्वतंत्रता और व्यक्तिगत मार्ग दर्शन की जरूरत को प्रभावित करने के लिये एक अनुभव को प्रोत्साहित करने की कोशिश करता है। उसके उपहार व्यक्तिगत तौर पर लोगों को समर्पित हैं। प्रत्येक मनुष्य पवित्र भरोसे का एक भण्डारी नियुक्त है; प्रत्येक को देने वाले के दिशानिर्देशानुसार अपने

भरोसे को प्रवाहित करना है; और उसके भण्डारीपन के प्रत्येक हिसाब के द्वारा परमेश्वर को अर्पित करना है।"- एलेन जी० ह्वाईट टेस्टीमोनीज फॉर द चर्च, वॉल्यूम 7, पेज 176.

जब हम भण्डारी बन जाते हैं, हम हमारी जिम्मेदारी को दूसरे व्यक्तियों या एक संगठन पर नहीं डालेंगे। हमारी व्यक्तिगत जिम्मेदारी परमेश्वर के प्रति है और हमारे आस-पास के लोगों के साथ हमारे सभी पारस्परिक व्यवहार प्रतिबिम्बित होंगे (उत्प० 39:9; इसे भी देखें दानि० 3:16)। हम हाथ के काम को हमारी योग्यताओं की बेहतरी से अंगीकार करेंगे। परमेश्वर की दृष्टि में सफलता हमारे विश्वास और हमारी शुद्धता पर अधिक निर्भर करेगी बजाय ज्ञान और प्रतिभा के।

पढ़ें 2 कुरिं० 5:10, एक बुद्धिमान भण्डारी होने के अर्थ के संदर्भ में हम इन शब्दों को कैसे समझते हैं?

धर्मविज्ञानियों और दार्शनिकों ने स्वतंत्र विचार के कठिन प्रश्न पर सदियों तक बहस की है। परन्तु पवित्रशास्त्र स्पष्ट है: हमारे पास मानव प्राणियों के तौर पर स्वतंत्र विचार और स्वतंत्र चुनाव है। हमारे कर्मों के द्वारा न्यायोचित ठहराये जाने के विचार का अन्यथा कोई अर्थ नहीं है। इसलिये, हमारे पास व्यक्तिगत जिम्मेदारी, परमेश्वर की अनुग्रह से, सब चीजों में जो हम करते हैं सही निर्णय चुनाव करने का है, जिसमें हमारे स्वामी की सभी चीजों का विश्वस्त भण्डारी होना शामिल है।

शुक्रवार **फरवरी 2**

अतिरिक्त विचार: कुछ पुराने नियम के पदों में "भण्डारी" शब्द का अनुवाद एकल शब्द से नहीं आता वरन यह एक वाक्यांश के रूप में आता है: असर अल बायत (asher al bayt) "वह जो घर के ऊपर है।" उदाहरण के लिये उत्पत्ति 43:19 अनुवादित हो सकता है: "तब वे यूसुफ के घर के अधिकारी के निकट जाकर घर के द्वार पर इस प्रकार कहने लगे"। यदि कोई विचार करता है कि जो परिवार घर में वास करता है स्वयं घर का हिस्सा है, तब एक व्यक्ति के लिये अपने स्वयं के घर से अधिक मोल क्या होता है? इस प्रकार एक भण्डारी कुछ वैसा है जिस पर कुछ मूल्यवान वस्तुएँ सौंपी जाती है, हालाँकि वह उसका नहीं है। विभिन्न तरीके से जितना यह होना चाहिए जिम्मेदारी को बढ़ा देता है यदि भण्डारी अपने स्वयं की वस्तुओं का प्रभारी हो।

यही विचार नये नियम में भी जारी है। "नया नियम पुराने नियम के विचारों को ले लेता है और पहली सदी के विचारों अवधारणाओं, और शब्दों से जुड़ जाता है, इस प्रकार भण्डारीपन पर बाईबलीय शिक्षा को समृद्ध और विस्तृत करता है। भण्डारीपन के साथ संबंध में सर्वाधिक प्रयुक्त ग्रीक शब्द ओईकोस (oikos) और ओईकिया (oikia), 'घर' से लिये गये हैं। ओईकोनोमोस (oikonomos) वह है जो घर की देख-भाल करता है: भण्डारी या प्रबंधक। ओईकोनोमिया (oikonomia) भाववाचक संज्ञा है, 'घर का प्रबंधन,' जिसका अर्थ अकसर अधिक व्यापक होता है।"– Handbook of seventh-day Adventist theology, P. 653.

विचार-विमर्श के लिये प्रश्न:

1. वर्जित फल खाने की जिम्मेदारी लेने के बदले आदम ने परमेश्वर से क्या कहा जब उसे पूछा गया कि उसने क्या किया? उत्प०3: 12, कितना दिलचस्प है कि पाप के द्वारा लायी गई प्रारंभिक मानव प्रतिक्रियाओं में से एक है स्वयं की गलती को दूसरे पर डालना। अपने कर्मों के लिये व्यक्तिगत जिम्मेदारी को ग्रहण करने की अपनी इच्छा के बारे में उसकी प्रति क्रिया क्या कहती है? यह हमारी स्वयं की इच्छा के विषय भी हमें क्या कहना चाहिए? हमारी गलतियों के लिये दूसरों को दोषारोपित करने की सामान्य विशेषता से बचना हम कैसे सीख सकते हैं?
2. कक्षा में, चीजों के भण्डारी होने के विचार पर जो मूर्त नहीं पर आत्मिक हैं, चिंतन करें। इसका क्या अर्थ है? इन चीजों को हम कैसे "प्रबंध" करेंगे?
3. प्रकाशितवाक्य 14: 6-12 के तीन दूतों के संदेश के विषय सोचें। कौन से महत्त्वपूर्ण सच्चाई यहाँ पर दर्शाई गई हैं जिसका भण्डारी होने को हमें जिम्मेदारी दी गई है?
4. आत्मिक चीजों पर विश्वास करना और भरोसा करना सीखना हमारे लिये क्यों इतना महत्त्वपूर्ण है जिसे हम पूरी तरह नहीं समझते हैं? किस सांसारिक तरीके से हम उसे हमेशा कैसे भी करते हैं?